तेवर वही, अंदाज नया .....!
साप्ताहिक

उज्जैन टाइम्स

प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा

RNI No. 7583/61

● वर्ष : 63, अंक : 17 ● उज्जैन, मंगलवार दिनांक 23-01-2024 से 29-01-2024 तक ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 2 रुपये

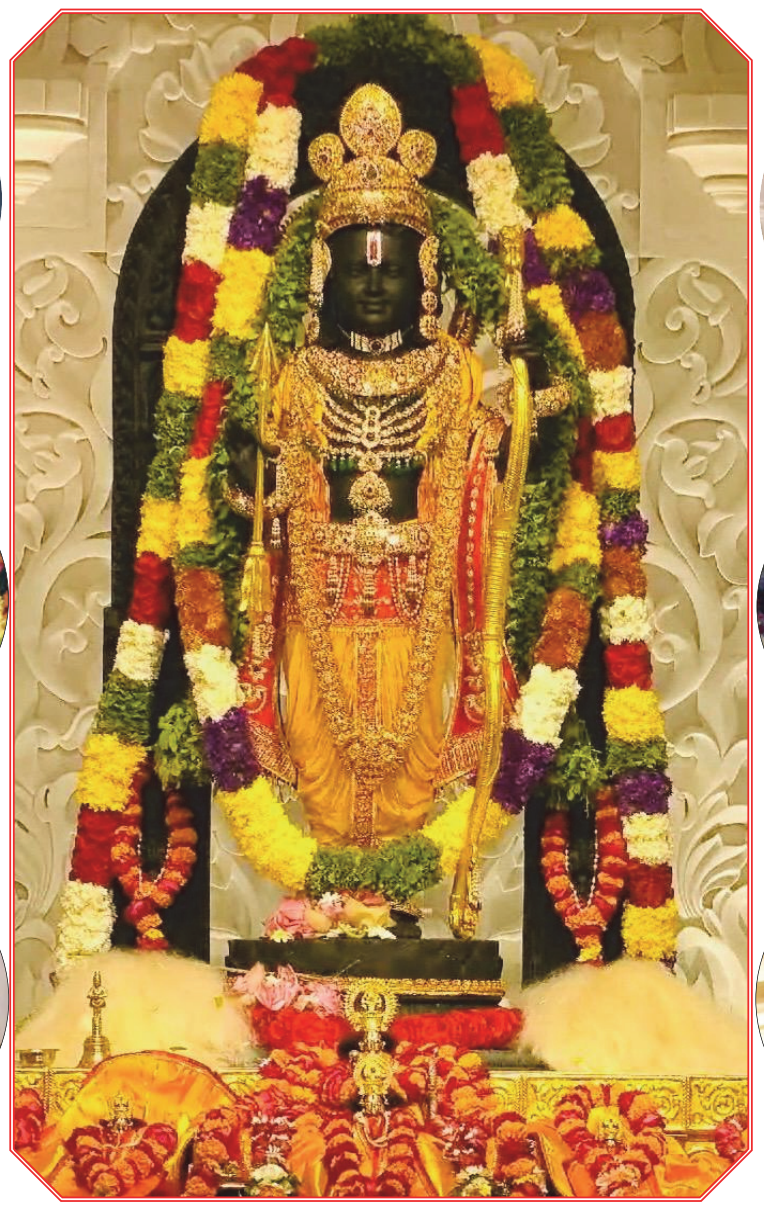

अयोध्या की छटा निराली थी, बाबरी ढांचा था, वहां राम मंदिर बन गया

अयोध्या में रामलला विराजमान हो गए हैं। 500 सालों का इंतजार 84 सेकेंडों में खत्म हो गया। भाव, श्रद्धा और आस्था का महापर्व इस दौरान पूरे देश में देखा जा रहा है। अयोध्या की तो छटा ही निराली थी, जहां पीएम नरेंद्र मोदी ने भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा की तो वहीं तमाम मेहमान एकटक इस ऐतिहासिक क्षण को देखते रहे। इसके साथ ही 1528 से चला आ रहा रामजन्मभूमि का संघर्ष भी सुखद परिणति के साथ समाप्त हो गया। अब जहां कभी बाबरी ढांचा था, वहां भव्य राम मंदिर हो गया है। देश-दुनिया के आस्थावानों का जो अब केंद्र बनने वाला है।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद प्रतिमा की आंखों पर बंधी प्रतीकात्मक पट्टी को भी खोला गया। इसके बाद सभी ने भगवान राम के दिव्य दर्शन किए और आसमान से करीब तीन मिनट तक पुष्प वर्षा होती रही। इस तरह 16 जनवरी को शुरू हुआ प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन 84 सेकेंडों के शुभ मुहूर्त में हुई पूजा के साथ समाप्त हुआ। प्राण प्रतिष्ठा की पूजा की सामग्री हाथों में लेकर पीएम नरेंद्र मोदी खुद पहुंचे। कुर्ता और धोती पहने और माथे पर तिलक लगाए पीएम नरेंद्र मोदी विधि-विधान से रामलला की प्राण प्रतिष्ठा करते दिखे।

पूजा के दौरान पीएम नरेंद्र मोदी के बगल में आरएसएस के प्रमुख मोहन भागवत भी बैठे हुए थे। उनके अलावा यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ, राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, श्रीराजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महंत नृत्यगोपाल दास, अनिल मिश्र और डोमराजा भी मौजूद थे। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का पूरा आयोजन विधि-विधान के साथ पंडित लक्ष्मीकांत दीक्षित और उनके साथ 121 अन्य पुजारियों ने कराया। प्राण प्रतिष्ठा की पूजा के दौरान भारतीय सेना के हेलिकॉप्टर पुष्प वर्षा करते रहे। पीएम नरेंद्र मोदी ने इस दौरान रामलला की उस पुरानी मूर्ति की भी पूजा की, जिसे पुराने परिसार से निकालकर नए मंदिर में स्थान दिया गया है। इस प्रतिमा को रविवार रात को ही रखा गया था।

अयोध्या में रामलला के विराजने के साथ ही राम जन्मभूमि के मंदिर के लिए 500 सालों से चले आ रहे संघर्ष का भी पटाक्षेप हो गया है। प्राण प्रतिष्ठा को लेकर भारत ही नहीं बल्कि दुनिया भर में रामभक्तों में उत्साह का संचार देखा गया। रामलला के अवधपुरी को आगमन को आस्था ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति के लिहाज से भी युग परिवर्तनकारी माना जा रहा है।

सम्पादकीय

विराजमान हुए प्रभु श्रीराम

अयोध्या में राम विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा सौहार्द और उल्लासपूर्ण वातावरण में हो गई। इसके साथ ही लंबे समय से चला आ रहा विवाद भी समाप्त हो गया। राम भारतीय आस्था के प्रतीक हैं। पौराणिक प्रमाणों के अनुसार उनका जन्मस्थान उसी जगह को माना जाता है, जहां अभी भव्य मंदिर बना है। इसी जगह को लेकर करीब पांच सौ वर्षों से विवाद था। भाजपा की प्रमुख प्रतिज्ञाओं में से एक यह भी थी कि वह राम मंदिर का निर्माण राम के मूल जन्म स्थान पर ही कराएगी। इस तरह भाजपा की प्रतिज्ञा भी पूरी हो गई। विवाद इस बात को लेकर था कि राम मंदिर को ध्वस्त कर आक्रांता शासकों ने वहां मस्जिद खड़ी कर दी थी। उस जगह पर मालिकाना हक पाने के लिए संत समाज संघर्ष कर रहा था। अंग्रेजी हुकूमत ने इसका निपटारा दोनों समुदायों के लिए अलग-अलग पूजा करने की इजाजत देकर किया था। मगर संत समाज उससे संतुष्ट नहीं था। आजादी के बाद उस जगह को प्राप्त करने के लिए देश के विभिन्न न्यायालयों का दरवाजा खटखटाया गया। कई मौकों पर केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार ने भी मामले को सुलझाने का प्रयास किया, मगर कोई व्यावहारिक हल नहीं निकल सका। फिर इसके लिए भाजपा ने देशव्यापी आंदोलन चलाया और कारसेवकों के दल ने विवादित ढांचे को ध्वस्त कर दिया था। तब अनवरत सुनवाइयों, गवाहियों के बाद आखिरकार सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला दिया कि विवादित जगह मूल रूप से राम जन्मस्थान है और उस पर संत समाज का हक है। इस मंदिर को बनने में इसलिए इतना वक्त लग गया कि संवैधानिक सिद्धांतों और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत किसी एक आस्था के पक्ष में एकतरफा फैसला करना किसी भी सरकार के लिए मुश्किल जान पड़ता था। हालांकि उसमें राजनीतिक नजरिया भी शामिल था। जबकि आखिरकार सर्वोच्च न्यायालय ने तर्क दिया कि राम जन्मभूमि भारतीय आस्था से जुड़ा मामला है, इसलिए विवादित जगह पर उसे स्वामित्व दिया जाना चाहिए। दूसरे पक्ष के लिए अलग से जगह प्रदान की जानी और उस पर उनकी इच्छा के अनुरूप पूजा स्थल का निर्माण कराया जाना चाहिए। वह फैसला दोनों पक्षों ने मंजूर किया। अगर इस मामले को राजनीतिक रंग न दिया गया होता, तो शायद यह इतना लंबा न खिंचता। जब राममंदिर आंदोलन शुरू हुआ तो अल्पसंख्यक समुदाय के भीतर तरह-तरह से भय भरने और उसे उकसाने का भी प्रयास किया जाता रहा। मगर अच्छी बात है कि सर्वोच्च न्यायालय का फैसला आने और उसके बाद राम मंदिर निर्माण की प्रक्रिया शुरू होने के बाद किसी तरह की कोई अप्रिय घटना नहीं घटी। किसी प्रकार का उन्माद का वातावरण नहीं बना। राम विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा से पहले और उसके बाद भी प्रधानमंत्री ने संकल्प दोहराया कि वे राम के आदर्शों पर चलते हुए सुशासन स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।

निश्चित ही यह संकल्प उम्मीदें जगाता है। भारत जैसे धर्मबहुल और विविध संस्कृतियों वाले देश में सुशासन की नीव सद्भावना पर ही टिकती है। जिस तरह मंदिर निर्माण और उसमें प्राण प्रतिष्ठा तक सौहार्द और सद्भाव का वातावरण दिखाई दिया, वह इस नींव की मजबूती का भरोसा पैदा करता है। राम तो पुरुषोत्तम हैं, समदर्शी और सद्भावना के प्रतीक हैं। इसीलिए रामराज किसी भी शासन की आत्यंतिक कसौटी है। लोक आस्था से जुड़े राम का मंदिर लोक को समर्पित कर भाजपा और उसकी सरकारों ने अपना संकल्प पूरा कर दिया है, अब उसके सामने सद्भाव और सुशासन का वातावरण बनाने के संकल्प पर खरा उतरने की परीक्षा है।

एक वाहन, एक फास्टैग, फास्टैग की पहुंच दर लगभग 98% है और इसके 8 करोड़ से अधिक उपयोगकर्ता हैं

इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह प्रणाली की दक्षता बढ़ाने और टोल प्लाजा पर निर्बाध आवाजाही प्रदान करने के लिए, NHAI ने एक वाहन, एक फास्टैग पहल की है, जिसका उद्देश्य कई वाहनों के लिए एकल फास्टैगका उपयोग करने या एक विशेष वाहन के लिए कई फास्टैग को जोड़ने के उपयोगकर्ता के व्यवहार को हतोत्साहित करना है।

NHAI फास्टैग उपयोगकर्ताओं को RBI दिशानिर्देशों के अनुसार KYC अपडेट करके अपने नवीनतम फास्टैग की अपने ग्राहक को जानें (KYC) प्रक्रिया को पूरा करने के लिए भी प्रोत्साहित कर रहा है। वैध बैलेंस लेकिन Incomplete KYC वाले फास्टैग को 31 जनवरी 2024 के बाद बैंकों द्वारा निष्क्रिय/ब्लैकलिस्ट कर दिया जाएगा।

असुविधा से बचने के लिए, उपयोगकर्ताओं को यह सुनिश्चित करना होगा कि उनके नवीनतम स्न्नस्ञ्जड्डद्द का चड्डंष्ट पूरा हो गया है। फास्टैग उपयोगकर्ताओं को एक वाहन, एक फास्टैग का भी अनुपालन करना होगा और अपने संबंधित बैंकों के माध्यम से पहले जारी किए गए सभी फास्टैग को त्यागना होगा।

केवल नवीनतम फास्टैग खाता सक्रिय रहेगा क्योंकि पिछले टैग 31 जनवरी 2024 के बाद निष्क्रिय/ब्लैकलिस्ट कर दिए जाएंगे। आगे की सहायता या प्रश्नों के लिए, फास्टैग उपयोगकर्ता निकटतम टोल प्लाजा या अपने संबंधित जारीकर्ता बैंकों के टोल-फ्री ग्राहक सेवा नंबर पर पहुंच सकते हैं। एक विशेष वाहन के लिए कई फास्टैग जारी किए जाने और RBI के आदेश का उल्लंघन करते हुए KYC के बिना फास्टैग जारी किए जाने की हालिया रिपोर्टों के बाद NHAI ने यह पहल की है। इसके अलावा, फास्टैग को कभी-कभी जानबूझकर वाहन की विंडस्क्रीन पर नहीं लगाया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप टोल प्लाजा पर अनावश्यक देरी होती है और साथी राष्ट्रीय राजमार्ग उपयोगकर्ताओं को असुविधा होती है।

एक वाहन, एक फास्टैग पहल टोल संचालन को अधिक कुशल बनाने और राष्ट्रीय राजमार्ग उपयोगकर्ताओं के लिए निर्बाध और आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करने में मदद करेगी।

आय के स्त्रोतों पर विशेष ध्यान दिया जाए, बाजार वसूली, दुकानों से किराया वसूली, सम्पत्तिकर की वसूली शत-प्रतिशत की जाए-आयुक्त

उज्जैन। निगम आयुक्त श्री आशीष पाठक ने निगम अधिकारियों के साथ एक बैठक करते हुए निर्देशित किया कि आगामी 26 जनवरी गणतंत्र दिवस की तैयारीयां समय पूर्व सुनिश्चित की जाएं। निगम आयुक्त ने निर्देशित किया कि 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के अवसर पर दशहरा मैदान पर आयोजित होने वाले मुख्य समारोह, निगम मुख्यालय, झोन कार्यालयों के साथ ही शहर के विभिन्न स्थानों पर होने वाले गणतंत्र दिवस समारोह में निगम

द्वारा की जाने वाली सभी आवश्यक व्यवस्थाओं के साथ ही पेंच वर्क, प्रकाश व्यवस्था, आवश्यक संधारण कार्य, रंगाई पुताई, आवारा मवेशीयों पर नियंत्रण इत्यादि समय पूर्व सुनिश्चित की जाए। निगम की आय के संबंध में चर्चा करते हुए निर्देशित किया कि आय के स्त्रोतों पर विशेष ध्यान दिया जाए।

इसरो-वर्ष 2023 के असाधारण भारतीय

इसरो-वर्ष 2023 के असाधारण भारतीय

इस पुरस्कार ने अंतरिक्ष अन्वेषण की सीमाओं को आगे बढ़ाने में ISRO द्वारा किए गए उल्लेखनीय योगदान को मान्यता दी।

एक राष्ट्रीय टीवी चैनल द्वारा शुरू किया गया यह पुरस्कार नई दिल्ली में एक शानदार समारोह में ISRO के अध्यक्ष एस. सोमनाथ और चंद्रयान 3 के परियोजना निदेशक डॉ. पी. वीरमुथुवेल ने प्राप्त किया।

पुरस्कार उद्धरण में कहा गया है कि इस पुरस्कार ने अंतरिक्ष अन्वेषण की सीमाओं को आगे बढ़ाने में इसरो द्वारा किए गए उल्लेखनीय योगदान को मान्यता दी है। वर्ष 2023 निस्संदेह इतिहास की किताबों में एक ऐसे कालखंड के रूप में दर्ज किया जाएगा जब भारत की अंतरिक्ष एजेंसी ने चुनौतियों का सामना करने में अद्वितीय कौशल और लचीलेपन का प्रदर्शन किया। 2023 में इसरो की उपलब्धियों का शिखर चंद्रमा के अज्ञात दक्षिण ध्रुवीय क्षेत्र पर चंद्रयान -3 की पहली सफल सॉफ्ट लैंडिंग थी, पुरस्कारों के लिए प्रतिष्ठित जूरी पैनल में प्रतिष्ठित हस्तियां शामिल थीं, जिनमें भारत के पूर्व सॉलिसिटर जनरल, हरीश साल्वे पटकथा लेखक और गीतकार जावेद अख्तर सेवानिवृत्त सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश, न्यायमूर्ति इंदु मल्होत्रा, पूर्व भारतीय एथलीट और एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के उपाध्यक्ष अंजू बॉबी जॉर्ज आरपी संजीव गोयनका ग्रुप के चेयरपर्सन संजीव गोयनका पर्यावरण कार्यकर्ता और वकील अफरोज शाह।

भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा की शुभकामनाएं

राम हृदय स्त्रोत-(अयोध्या में भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा की शुभकामनाएं) मित्रों! अवतारों का प्राण उनके द्वारा दिया ज्ञान-विज्ञान का उपदेश होता हैं। अतः उनके लोक हित कारी उपदेश को हृदय में प्रतिष्ठित या धारण करना ही प्राण प्रतिष्ठा हैं) भगवान श्रीरामचन्द्रजी अपने प्रिय भक्त हनुमानजी को गुढ तत्व के बारे मे बताते है-ततो रामः स्वयं प्राह हनुमंतमुपस्थितम् श्रृणु तत्वं प्रवक्ष्यामि ह्यात्मानात्मपरात्मनाम्-अर्थात् अपने सम्मुख खडे हनुमानजी से भगवान श्रीरामचन्द्रजी ने स्वयं कहा कि. मै तुम्हे आत्मा, अनात्मा और परमात्मा का तत्व बताता हूँ (सावधान होकर) सुनो!

आगे भगवान कहते हैं कि,

अविच्छिन्नस्य पूर्णेन एकत्वं प्रतिपाद्यते।
तत्वमस्यादिवाक्यैश्च साभासस्याहमस्तथा।
ऐक्यज्ञानं यदोत्पन्नं महावाक्येन चात्मनो, तदाविद्या स्वकार्येश्च नश्यत्येव न संशयः
एतद्विज्ञाय मद्भक्तो मद्भावायोपपद्यते।
मद्भक्तिविमुखानां हि शास्त्रगर्तेषु मुह्यताम् न ज्ञानं न मोक्षः स्यात्तेषाम् जन्मशतैरपि/इदं रहस्यं हृदयं ममात्मनो मयैव साक्षात् कथितं त्वानघ मद्भक्ति हीनाय शठाय न त्वया दातव्यमैन्द्रादपि राज्यतोसधिकम्
(अध्यात्म रामायण)

याने-अवच्छिन्न चेतन(जीव) की तत्वमसि आदि महा वाक्यों द्वारा पूर्ण ब्रह्म (विश्वरूप परमात्मा)के साथ एकता बताई जाती है.प्रश्न उठता है कि, श्रुति के इस 'तत्-त्वं-असि' महावाक्य कहने का आशय क्या हैं। नारायण भगवान श्रीमायानंदजी चैतन्य द्वारा विरचित सर्वांगयोग में सात्विक श्रद्धावान मुमुक्षु तत्वदर्शी सदुरु से इसका रहस्य जानने के लिए प्रश्न करता हैं कि- कहें तत् श्रुति वो क्या हैं? क्या हैं त्वं रहता कहाँ? असि कहा जिसे वो क्या? ध्यान में बैठता नहीं (सर्वांगयोग अध्याय पहला श्लोक 5) इसके प्रतिउत्तर में नारायण भगवान प्रत्यक्ष बोध कराते हुए कहते हैं कि अपने सम्मुख शक्कर से बने पदार्थ बतासे या मिश्री का अधिष्ठान रखते हुए पहले उस रखे हुए पिंड स्वरुप अधिष्ठान से सम्पूर्ण विश्व में अपने देह में स्थित स्वयंभू साधनों(5 ज्ञानेन्द्रिय, मन, बुद्धि व स्वयं जीवात्मा या जान) से मिलान कर देखना। कहते हैं कि इंद्रियों से दीखता है 'क्षर' सो 'तत्' हैं कहा 'त्वं' से 'अक्षर' को जाना 'असि' निश्चय नाम है/क्षर में अंग हैं आठ, अक्षर एक अरूप है/जहां हैं भावना दोनों लय का स्थान 'वस्तु' सो (सर्वांग योग अ.3श्लो.4-5)अर्थात् पांच ज्ञानेन्द्रिय और छटवें मनसे सामने रखे अधिष्ठान बतासे से लेकर अपने सहित सम्पूर्ण विश्व में अखण्ड परिवर्तित होते हुए पांच तत्व और तीन गुणों का बना जो दृश्य या स्वरुप दिख रहा है। उसे ही 'तत्' कहते हैं। तथा इसी बदलते हुए स्वरुप में अस्ति-भाति-प्रिय रुप से जो 'अक्षर'-आत्मा है उसीको 'त्वं' (बुद्धि के द्वारा) जानो। इन दोनों भावों (क्षर-अक्षर या साकार-निराकार का लय (सामने रखें पिंड अधिष्ठान में) शक्कर इस नाम के रूपमें तथा (चराचर जगत में) 'विश्व' इस नाम से है। यह विश्व ही विश्वरुप पुरूषोत्तम परमात्मा होकर निश्चय ही 'असि' पद हैं। अर्थात् 'तत्-त्वं-असि' या क्षर-अक्षर-पुरुषोत्तम इस त्रिपुटी भावों में सर्वत्र विश्वरुप परमात्मा ही प्रत्यक्ष है। पांच तत्त्व और तीन गुण (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी और सत्व, रज, तम) इन आठ अंगों वाला सम्पूर्ण दृश्य क्षर हैं। जो सतत अखंड मंडलाकार घुमता रहता हैं। इसी परिवर्तित होते दृश्य में अभिन्न किसी एकरूपमे आबद्ध न रहने वाला अरूप 'अक्षर' हैं। जहां ये दोनों भाव रहते हैं वह विश्व ही पुरुषोत्तम परमात्मा है। इस त्रिपुटी भाव का लय स्थान वस्तु या 'अस्ति' है। जो त्रिपुटी सहित व त्रिपुटी रहित हैं। आगे भगवान श्रीरामचन्द्रजी कहते हैं कि जब इस महावाक्य द्वारा (उपरोक्त बताई रीति से) जीवात्मा और परमात्मा की (याने पिंड-ब्रह्मांड की) एकता का ज्ञान उत्पन्न हो जाता है उस समय अपने कार्यों सहित अविद्या नष्ट हो ही जाती है।

इसमें कोई संदेह नहीं! मेरा भक्त इस उपर्युक्त तत्व को समझकर मेरे स्वरूप को प्राप्त हो जाता है। पर जो लोग मेरी भक्तिको (अपने स्वकर्म द्वारा विश्वरुप परमात्मा की अनन्य सेवा को) छोड़कर शास्त्र रूप गड्ढे में पड़े भटकते रहते हैं उन्हें सौ जन्म तक भी न तो (अपने निज मूल स्वरूप का) ज्ञान होता है और न ही मोक्ष (भ्रमकी निवृत्ति) ही प्राप्त होता है। मित्रों! भगवान श्रीराम कहते है कि यह परम रहस्य मुझ आत्मस्वरूप राम का हृदय है और साक्षात मैने ही तुम्हे सुनाया है। यदि तुम्हें इंद्रलोकके राज्य से भी अधिक संपत्ति मिले तो भी तुम इसे मेरी भक्ति से हीन किसी दुष्ट पुरुषको मत सुनाना (परन्तु सात्विक श्रद्धावान दैवीय सम्पत्तिवान को अवश्य बताना) नर्मदे हर!

● लेखक-नंदकिशोर शर्मा,
उज्जैन (म.प्र.)

टाटा ग्रुप-शीर्ष 100 में एकमात्र भारतीय ब्रांड

ब्रांड फाइनेंस रिसर्च 2024 रिपोर्ट के अनुसार, Technology Companies (प्रौद्योगिकी कंपनियां) वैश्विक स्तर पर सबसे मूल्यवान ब्रांड बनी हुई हैं, जिसमें प्रौद्योगिकी क्षेत्रों की शीर्ष पांच सबसे मूल्यवान कंपनियां शामिल हैं। भारतीय दृष्टिकोण से, टाटा समूह शीर्ष 100 सबसे मूल्यवान ब्रांडों में एकमात्र भारतीय ब्रांड था। टाटा ने अपनी रैंकिंग 2023 में 69वें से सुधारकर 2024 में 64वें स्थान पर कर ली। टाटा समूह का कुल मूल्य 28.63 बिलियन डॉलर था।

2024 के लिए, सैमसंग विश्व स्तर पर शीर्ष पांच सबसे मूल्यवान ब्रांडों में शामिल हो गया है। 2023 में दूसरे स्थान पर खिसकने के बाद Apple ने पहला स्थान हासिल किया। Apple की ब्रांड वैल्यू 219 बिलियन डॉलर (74 फीसदी) बढ़कर 517 बिलियन डॉलर हो गई। एप्पल ने प्रीमियम स्मार्टफोन बाजार में 71 प्रतिशत मूल्य हिस्सेदारी के साथ प्रमुख खिलाड़ी के रूप में अपनी स्थिति बरकरार रखी है।

ब्रांड छवि में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका

ब्रांड फाइनेंस रिसर्च ने उन ब्रांडों के बीच महत्वपूर्ण लाभ पाया, जिन्होंने कृत्रिम बुद्धिमत्ता में भारी निवेश किया है, जिससे NVIDIA (ब्रांड मूल्य 163 प्रतिशत बढ़कर $ 44.5 बिलियन) दुनिया का सबसे तेजी से बढ़ने वाला ब्रांड बन गया है। माइक्रोसॉफ्ट (ब्रांड मूल्य 78 प्रतिशत बढ़कर 340.4 बिलियन डॉलर) में भी प्रभावशाली ब्रांड मूल्य में वृद्धि देखी गई, जो दो स्थान ऊपर उठकर दूसरे स्थान पर पहुंच गया।

ब्रांड फाइनेंस के अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी डेविड हाई ने टिप्पणी की एप्पल ने रणनीतिक विविधीकरण और प्रीमियमीकरण के माध्यम से अपने ब्रांड मूल्य में वृद्धि की है, जो आईफोन की बिक्री पर भारी निर्भरता से हटकर वियरेबल्स और एप्पल टीवी सब्सक्रिप्शन जैसी सेवाओं में उद्यम की ओर बढ़ रहा है। हमारे अनुसार शोध के अनुसार, 50 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाताओं ने माना कि एप्पल महंगा है, लेकिन कीमत के लायक है, जिससे मूल्य प्रीमियम की मांग करने की ब्रांड की क्षमता को बल मिलता है। डॉयचे टेलीकॉम (ब्रांड मूल्य 17 प्रतिशत बढ़कर 73.3 अरब डॉलर) ने वेरिजोन (ब्रांड मूल्य 6 प्रतिशत बढ़कर 71.8 अरब डॉलर) को पीछे छोड़ते हुए दुनिया के सबसे मूल्यवान दूरसंचार ब्रांड होने का खिताब हासिल किया है। विश्व स्तर पर नौवें स्थान पर, डॉयचे टेलीकॉम सबसे मूल्यवान यूरोपीय ब्रांड के रूप में भी अग्रणी है। ब्रांड फाइनेंस दुनिया की अग्रणी स्वतंत्र ब्रांड मूल्यांकन और रणनीति परामर्श कंपनी है। लंदन शहर में मुख्यालय, 20 से अधिक देशों में मौजूद हैं। लगभग 30 वर्षों से उन्होंने सभी प्रकार की कंपनियों और संगठनों को अपने ब्रांडों को निचले स्तर तक जोड़ने में मदद की है।

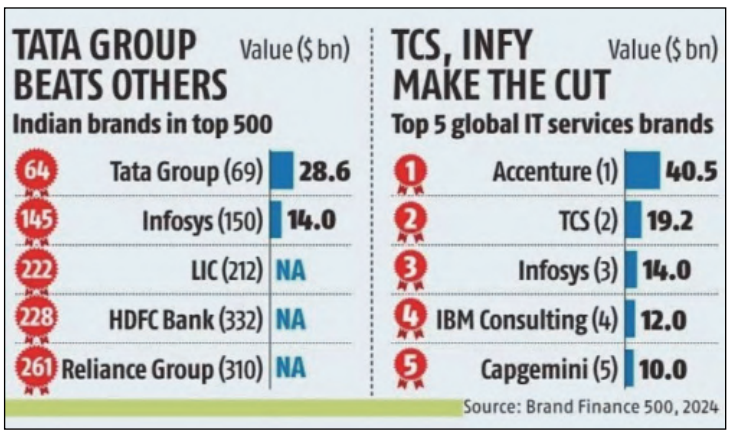

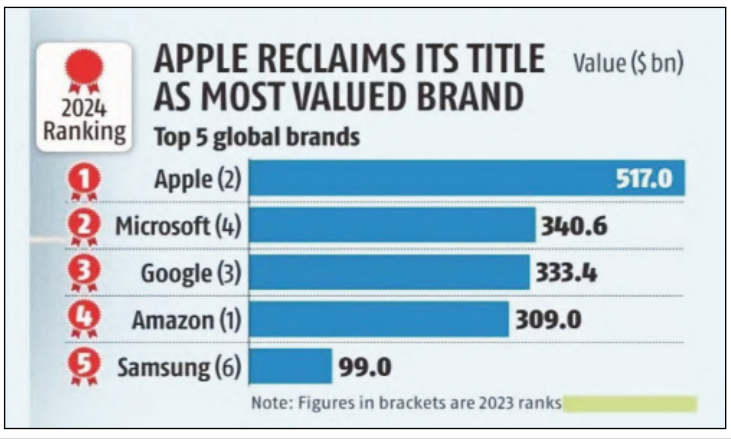

Personal Finance : सामान्य व्यक्तियों के लिए

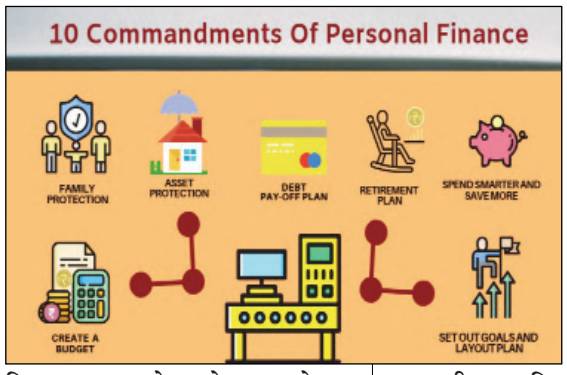

Rule of 72 : पैसा दोगुना करना

किसी निश्चित रिटर्न दर पर आपके पैसे को दोगुना करने के लिए आवश्यक वर्षों की संख्या। यदि आप जानना चाहते हैं कि 8% ब्याज पर आपका पैसा दोगुना होने में कितना समय लगेगा, तो 72 को 8 से विभाजित करें और आपको 9 वर्ष मिलेंगे. 8% की दर से इसमें 09 वर्ष लगेंगे. 6% की दर से इसमें 12 वर्ष लगेंगे. 9% की दर से इसमें 8 वर्ष लगेंगे।

Rule of 114-अपना पैसा तीन गुना करें

यह नियम निर्धारित करता है कि किसी निश्चित दर पर आपके पैसे को तीन गुना करने के लिए कितने वर्षों की आवश्यकता होगी, यदि आप जानना चाहते हैं कि आपके पैसे को तीन गुना करने में कितना समय लगेगा, तो निम्नलिखित करें।

12% ब्याज पर, 114 को 12 से विभाजित करें और 9.5 वर्ष प्राप्त करें। 6% की दर पर, इसमें 19 साल लगेंगे 12% दर पर, इसमें 9.5 वर्ष लगेंगे।

Rule of 144-धन को चौगुना करने के लिए आवश्यक वर्षों की संख्या

किसी निश्चित दर पर आपके पैसे को चार गुना करने के लिए आवश्यक वर्षों की संख्या, यदि आप जानना चाहते हैं कि 12% ब्याज पर आपके पैसे को चार गुना करने में कितना समय लगेगा, तो 144 को 12 से विभाजित करें और 12 वर्ष प्राप्त करें। 6% ब्याज दर पर 24 वर्ष लगेंगे.

Rule of 70-कितनी तेजी से आधा हो जाएगा आपका पैसा?

यह जानने के लिए कि आपके निवेश का मूल्य कितनी तेजी से घटकर इसके वर्तमान मूल्य से आधा हो जाएगा, मौजूदा मुद्रास्फीति दर से 70 को विभाजित करें।यदि मुद्रास्फीति की दर 7% (मान लीजिए) है, तो 10 वर्षों में पैसे का मूल्य 50% कम हो जाएगा (आज के 10 रुपये 10 वर्षों में 5 रुपये के बराबर होंगे)।

Rule of 4% Withdrawal-सेवानिवृत्ति पर आवश्यक राशि

यह नियम पिछले 30 वर्षों में 96% लोगों के साथ सही साबित हुआ है। वार्षिक खर्च 5 लाख है तो रिटायर होने के लिए आवश्यक धनराशि 1.25 करोड़ (5 लाख×25 फैक्टर) है।

तरीका-व्यक्ति 50% निश्चित आय निवेश में और 50% इक्विटी निवेश में लगा सकता है। हर साल 4 फीसदी यानी 5 लाख निकाल सकते हैं. यह नियम 30 साल की अवधि में 96% समय तक काम करता है।

उपरोक्त नियम में यह वार्षिक व्यय/आय का 20-30-40× हो सकता है। यह 100% ऋण भी हो सकता है (व्यक्ति की जोखिम उठाने की क्षमता और रिटर्न की उम्मीद/निकासी पर निर्भर करता है)।

निकासी %=उस परिसंपत्ति का रिटर्न% (उस वर्ष में जो निवेश राशि को वार्षिकी में परिवर्तित करता है)।

Rule of 100 Age : Asset Allocation

इस नियम का उपयोग परिसंपत्ति आवंटन के लिए किया जाता है। यह पता लगाने के लिए कि आपके पोर्टफोलियो का कितना हिस्सा इक्विटी में आवंटित किया जाना चाहिए, अपनी उम्र 100 से घटाएं।

जोखिम उठाने की क्षमता की गणना-

आयु-30-इक्विटी 70%, ऋण 30%

आयु-60, इक्विटी 40%, ऋण 60%

Rule of 50-30-20-आवश्यकता+चाहत+बचत।

अपनी आय को 3 श्रेणियों में विभाजित करें-

आवश्यकताएँ (50%)-किराने का सामान, किराया, ईएमआई आदि।

चाहत (30%)-मनोरंजन, छुट्टियाँ, आदि।

बचत (20%)-इक्विटी, एमएफ, ऋण, एफडी, आदि।

फिर से व्यक्तिगत आवश्यकताओं और विशिष्ट आवश्यकता के आधार पर नियम में बदलाव किया जा सकता है।

Rule of 30% EMI-वर्किंग प्रोफेशनल के लिए।

कभी भी अपनी आय का 30% से अधिक ईएमआई में न डालें।

मान लीजिए कि आप प्रति माह 50,000 कमाते हैं, तो आपकी ईएमआई 15000 से अधिक नहीं होनी चाहिए।

फिर से इस%को आपकी जोखिम उठाने की क्षमता के अनुसार बदला जा सकता है, लेकिन आम तौर पर अपने वित्त में कुछ गुंजाइश रखने के लिए इसे कम रखने का प्रयास करें।

आपातकालीन नियम

आपातकालीन निधि के प्रयोजन के लिए हमेशा अपनी मासिक आय का कम से कम 5 गुना तरल संपत्ति में रखें।

यहां रिटर्न महत्वपूर्ण नहीं है, पहुंच/उपलब्धता महत्वपूर्ण है।

- सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तिगत वित्तीय नियम।
- Reasonable E&pectation-किसी को अपने निवेश नेटवर्क से उचित रिटर्न की उम्मीदें रखनी चाहिए।
- Individual Specific-निवेश और व्यक्तिगत वित्त अत्यंत व्यक्तिगत हैं।अपने व्यक्तिगत वित्तीय विशेषज्ञ से परामर्श लें।
- Free Advice is Advertisement-कोई भी निःशुल्क सलाह विज्ञापन है।

हमेशा वित्त सलाह और निष्पक्ष इनपुट प्राप्त करने के लिए भुगतान करें।

एनपीएस : एक बेहतरीन सेवानिवृत्ति विकल्प की ओर

2018 से पीएफआरडीए अधिकारियों ने इसे अधिक उपयोगकर्ता और निवेश अनुकूल बनाने के लिए इसमें 40 से अधिक बार बदलाव किए हैं।

ऐसे 5 प्रमुख परिवर्तन हैं जिन पर उपयोगकर्ता को ध्यान देना चाहिए क्योंकि ये परिवर्तन एनपीएस को कर-बचत और सेवानिवृत्ति योजना के लिए नंबर एक विकल्प बनाते हैं।

वस्तुतः कर-मुक्त (Ta& Free)

NPS 60 वर्ष की आयु में परिपक्व होता है। वार्षिकी योजना (After Annuity Purchase) खरीदने के लिए कम से कम 40% कोष का उपयोग किया जाना चाहिए। शेष भाग (60% तक) के लिए निकासी भी कर-मुक्त है। तो, अब, यह 100% कर-मुक्त है। 2019 के बजट से पहले ऐसा नहीं था।

पहले क्या थे नियम?

40% कॉर्पस के साथ एक वार्षिकी खरीदें और 40% कर-मुक्त धन निकालें और शेष 20% कर योग्य था।

उच्च इक्विटी एक्सपोजर 75% तक उच्च इक्टिवी एक्सपोजर

व्यक्ति अब एनपीएस में अपनी Equity और Debt ऋण आवंटन तय कर सकता है। लेकिन Equity में अधिकतम निवेश 75% तक सीमित है।

इससे पहले, जैसे ही आप 51 साल के हो जाते थे, हर साल Equity allocation कम होना शुरू हो जाता था। 60 साल की उम्र तक, Equity E&posure 50% तक गिर जाता था।

अक्टूबर 2022 में इक्विटी टेपरिंग नियम वैकल्पिक हो गया। अब, यदि आप चाहें, तो आप 60 वर्ष की आयु तक 75% Equity allocation बरकरार रख सकते हैं। आपको पहले की तुलना में अपने NPS investment के अधिक हिस्से पर इक्विटी रिटर्न का आनंद मिलता है।

यह वर्तमान समय में संभावित रिटर्न को बढ़ावा दे सकता है, जहां इक्विटी अन्य परिसंपत्ति वर्ग के संबंध में बेहतर रिटर्न दे रही है।

NPS में व्यवस्थित निकासी

Mutual fund SWP की तरह, NPS ने अक्टूबर 2023 में SWP की शुरुआत की। व्यक्ति को अभी भी 40% कॉर्पस के साथ वार्षिकी खरीदने की आवश्यकता है। लेकिन बाकी 60% के लिए आपको 60 से 75 साल के बीच व्यवस्थित तरीके (SWP) से पैसा निकालने का विकल्प मिलता है।

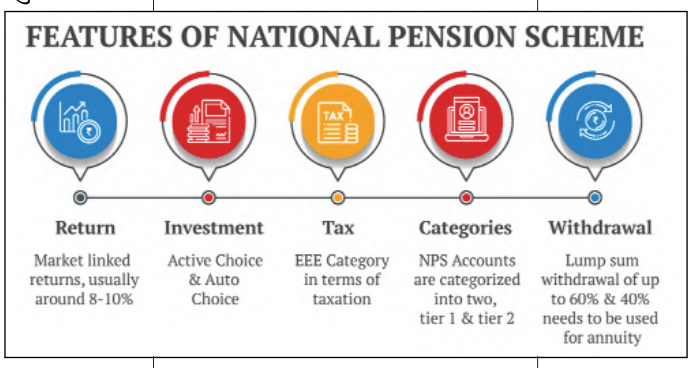

आप 60 से 75 वर्ष की आयु तक कर-मुक्त नियमित आय प्राप्त कर सकते हैं।

एनपीएस में आपका कोष बढ़ता रहेगा तो, SWP आपको एनपीएस में लंबे समय तक निवेशित रहने की अनुमति देता है। और इससे नियमित आय भी प्राप्त करें। यहां बताया गया है कि आप SWP से कैसे लाभान्वित होते हैं

आपको पेंशन मिलती है (कॉर्पस के 40% के साथ वार्षिकी योजना खरीदने पर) शेष 60% से, आप 60 और 75 (15 वर्ष) की आयु के बीच हर महीने निकाल सकते हैं, जो कर-मुक्त है एनपीएस में पैसा लगातार बढ़ता और बढ़ता रहता है

Same Day NAV और डी-रेमिट

अक्टूबर 2020 से, NPS ने D-Remit (डी-रेमिट) सुविधा शुरू की। यदि आप सुबह 9.30 बजे से पहले योगदान करते हैं तो यह आपको उसी दिन की NAV प्राप्त करने की अनुमति देता है। यदि आप सामान्य मार्ग से जाते हैं, तो इसमें T+2 दिन लगते हैं। डी-रेमिट सुविधा इस समयावधि को छोटा कर देती है।

D-Remit आपको एनपीएस एसआईपी स्थापित करने की सुविधाओं का लाभ में मदद करता है।

विभिन्न परिसंपत्ति वर्गों के लिए अलग-अलग फंड प्रबंधक

NPS में 10 पेंशन फंड मैनेजर हैं। प्रत्येक 4 परिसंपत्ति वर्गों का प्रबंधन करता है-इक्विटी, सरकारी बांड, कॉर्पोरेट बांड और एआईएफ। नवंबर 2023 तक, सभी 4 परिसंपत्ति वर्गों के लिए केवल एक फंड मैनेजर चुनना होगा।

अब, आप विभिन्न परिसंपत्ति वर्गों के लिए अलग-अलग फंड मैनेजर चुन सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप इक्विटी के लिए एचडीएफसी पेंशन मैनेजमेंट, कॉर्पोरेट बॉन्ड के लिए कोटक महिंद्रा पेंशन फंड और सरकारी बॉन्ड के लिए एसबीआई पेंशन फंड चुन सकते हैं।

एनपीएस क्या है?

राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) भारत के नागरिकों को वृद्धावस्था सुरक्षा प्रदान करने के लिए भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक पेंशन सह निवेश योजना है। यह सुरक्षित और विनियमित बाजार-आधारित रिटर्न के माध्यम से आपकी सेवानिवृत्ति की प्रभावी ढंग से योजना बनाने के लिए एक आकर्षक दीर्घकालिक बचत का अवसर लाता है।

यह योजना पेंशन फंड नियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) द्वारा विनियमित है। पीएफआरडीए द्वारा स्थापित नेशनल पेंशन सिस्टम ट्रस्ट (एनपीएसटी) एनपीएस के तहत सभी संपत्तियों का पंजीकृत मालिक है। अधिक जानकारी के लिए, कृपया अपने वित्तीय योजनाकार से संपर्क करें।

मुख्यमंत्री ने श्री रामराजा सरकार के दर्शन के साथ प्रदेश की समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की

ओरछा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ओरछा में श्री रामराजा सरकार मंदिर में भगवान श्री राम की विधिवत पूजा-अर्चना के साथ श्री रामलला की जन्मभूमि अयोध्या के भव्य, अलौकिक, दिव्य-नव मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह का सजीव प्रसारण देखा। अयोध्या में श्री रामलला की प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजा-अर्चना के साथ मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री रामराजा सरकार मंदिर, ओरछा में आचार्य पंडित श्री वीरेन्द्र बिदुआ और उनके सहयोगियों के श्लोक एवं मंत्रोच्चार के साथ पूजा-अर्चना की। डॉ. यादव ने आदित्यादि नवग्रह मंडलम पीठ, सर्वोत्तोभद्र मंडलम पीठ, श्री गणेश गौरी पीठ, श्री षोडष मातृका पीठ की विधि पूजन किया। भगवान श्री राम के चित्र पर पुष्प अर्पण करने के साथ ही मुख्यमंत्री ने जनप्रतिनिधियों के साथ आरती भी की। पूजा संपन्न होने के बाद भजन गायिका सुश्री माधुरी मधुकर ने भगवान श्री राम पर आधारित भजन प्रस्तुत किये। पूजन संपन्न कराने वाले आचार्य श्री वीरेन्द्र बिदुआ ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव एवं अन्य जनप्रतिनिधियों का पुष्पहार से स्वागत किया।

अयोध्या के लाईव प्रसारण के बाद मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जनप्रतिनिधियों के साथ मंदिर में श्री रामराजा सरकार के दर्शन कर पूजा अर्चना की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भगवान श्री राम से मध्यप्रदेश की समृद्धि और प्रदेशवासियों की खुशहाली के लिये प्रार्थना की। मंदिर परिसर में ही उन्होंने श्री रामराजा लोक के मॉडल का अवलोकन किया तथा उसकी प्रगति के संबंध में जानकारी प्राप्त की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ओरछा के श्री रामराजा सरकार के दरबार में आयोजित भंडारे में महिला श्रद्धालुओं को भोजन प्रसादी परोसी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के हाथों से प्रसाद पाकर राम भक्त महिला श्रद्धालुओं ने प्रसन्नता व्यक्त की तथा उन्हें अपना आर्शीवाद दिया। मुख्यमंत्री के हाथों भोजन प्रसादी ग्रहण कर रहीं महिला

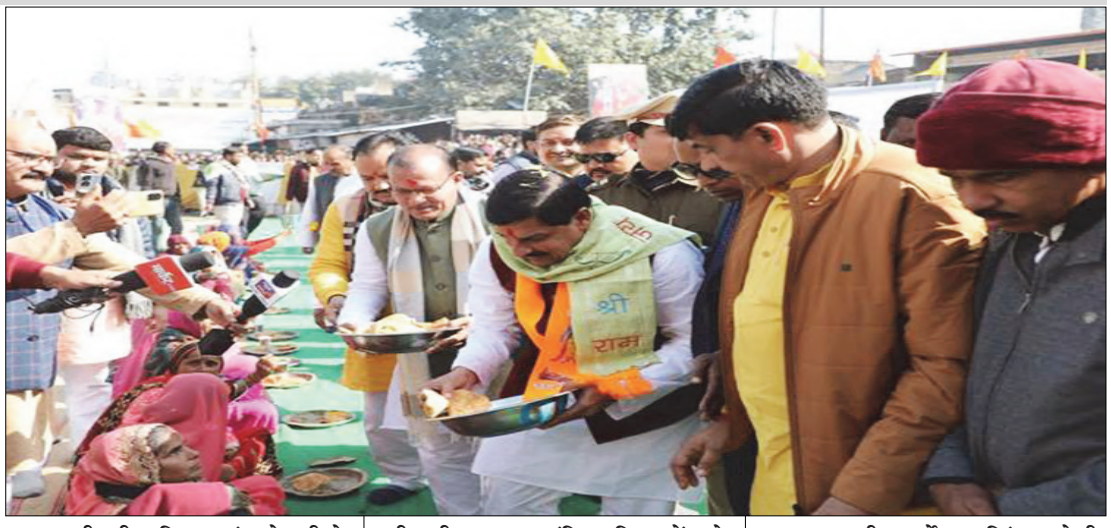

श्रद्धालु श्रीमती सविता एवं सरोजनी ने कहा कि अयोध्या में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर अपने मुख्यमंत्री के हाथों प्रसादी पाना वे अपना सौभाग्य मानती हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जनप्रतिनिधियों के साथ श्री रामराजा दरबार में चल रहे भंडारे में शामिल होकर भोजन प्रसादी ग्रहण की। श्री रामराजा मंदिर परिसर में बने पंडाल में एक बड़ी एलईडी स्क्रीन लगाई गई थी, जिस पर श्री रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह का सीधा प्रसारण किया जा रहा था। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के साथ पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान, संस्कृति पर्यटन और धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी, म.प्र.पाठ्य पुस्तक निगम के अध्यक्ष श्री शैलेन्द्र बरूआ, निवाड़ी विधायक श्री अनिल जैन, जतारा विधायक श्री हरिशंकर खटीक, श्री अखिलेश अयाची, पूर्व विधायक पृथ्वीपुर डॉ. शिशुपाल सिंह यादव सहित अन्य जनप्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

अयोध्या का अर्थ है एक अजेय शहर, यह भारत के 7 पवित्र शहरों में से एक है जो मोक्ष के प्रवेश द्वार की ओर जाता है। सरयू के तट पर स्थित, अयोध्या श्री राम की जन्मभूमि है।

वाल्मिकी रामायण में इस महान शहर का सुंदर वर्णन इस प्रकार है-

कोसलो नाम मुदितस्स्फीतो जनपदो महान्।
निविष्टस्सरयूतीरे प्रभूतधनधान्यवान् ।।1.5.5।।

सरयू नदी के तट पर कोसल नाम का एक महान और समृद्ध देश स्थित था, जो अन्न और धन से भरपूर और संतुष्ट लोगों से बसा हुआ था।

अयोध्या नाम नगरी तत्रासील्लोकविश्रुता।
मनुना मानवेन्द्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम् ।।1.5.6।।
आयता दश च द्वे च योजनानि महापुरी।
श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा सुविभक्तमहापथा ।।1.5.7।।

कोसल नामक देश में मनुष्य के स्वामी मनु द्वारा निर्मित प्रसिद्ध राजधानी अयोध्या थी। अच्छी तरह से निर्धारित किराए के साथ, सुंदर और समृद्ध शहर अयोध्या 12 योजन लंबाई और 3 योजन चौड़ाई तक फैला हुआ था।

राजमार्गेण महता सुविभक्तेन शोभिता।
मुक्तपुष्पावकीर्णेन जलसिक्तेन नित्यशः ।।1.5.8।।
तां तु राजा दशरथो महाराष्ट्रविवर्धनः।
पुरीमावासयामास दिवं देवपतिर्यथा ।।1.5.9।।

अच्छी तरह से बिछाए गए और फूलों से लदे चौड़े राजमार्ग और नियमित रूप से पानी छिड़के जाने के कारण ए शानदार दिखता है। दशरथ, राज्य की समृद्धि को बढ़ाते हुए, स्वर्ग में इंद्र की तरह अयोध्या में रहते थे।

कवाटतोरणवतीं सुविभक्तान्तरापणाम्।
सर्वयन्त्रायुधवतीमुपेतां सर्वशिल्पिभिः।।1.5.10।।
सूतमागधसम्बाधां श्रीमतीमतुलप्रभाम्।
उच्चाट्टालध्वजवतीं शतघ्नीशतसङ्कुलाम्।।1.5.11।।
वधूनाटकसङ्घैश्च संयुक्तां सर्वतः पुरीम्।
उद्यानाम्रवणोपेतां महतीं सालमेखलाम् ।।1.5.12।।

वह शहर जहां सभी प्रकार के कारीगर रहते थे, उसके बाहरी प्रवेश द्वार, अच्छी तरह से व्यवस्थित बाजार और सभी प्रकार के उपकरण और हथियार थे।

अतुलनीय वैभव के साथ, यह स्तुतिकारों और वंशावलीकारों से भरपूर था। इसमें झंडों और सैकड़ों सतघ्नियों से सजी आलीशान इमारतें थीं।

चारों तरफ उपनगरीय कस्बों वाले इस शहर में कई महिला नर्तक और कलाकार थीं। यह बगीचों और आम के बागों से भरा हुआ था और साल के पेड़ों से घिरा हुआ था।

दुर्गगम्भीरपरिघां दुर्गामन्यैर्दुरासदाम्।
वाजिवारणसम्पूर्णां गोभिरुष्ट्रैः खरैस्तथा।।1.5.13।।
सामन्तराजसङ्घैश्च बलिकर्मभिरावृताम्।
नानादेशनिवासैश्च वणिग्भिरुपशोभिताम्।।1.5.14।।
प्रासादै रत्नविकृतैः पर्वतैरुपशोभिताम्।
कूटागारैश्च सम्पूर्णामिन्द्रस्येवामरावतीम् ।।1.5.15।।

यह मजबूत किलेबंदी और गहरी खाई से घिरा हुआ था। उस नगर में कभी भी कोई शत्रु प्रवेश कर कब्जा नहीं कर सकता। यह अनेक हाथियों, घोड़ों, मवेशियों, ऊँटों और खच्चरों से भरपूर था। इसे कई सहायक राजाओं, जो श्रद्धांजलि अर्पित करते थे और विभिन्न देशों के व्यापारियों से अलंकृत किया गया था। इंद्र की अमरावती की तरह, यह पहाड़ों और कीमती पत्थरों से सुसज्जित थी।

चित्रामष्टापदाकारां नरनारीगणैर्युताम्।
सर्वरत्नसमाकीर्णां विमानगृहशोभिताम् ।।1.5.16।।

पुरुषों और महिलाओं के समूहों के साथ और 7 मंजिला महलों से सजा हुआ, यह एक बोर्ड की तरह अद्भुत लग रहा था जहां अष्टपद का खेल खेला जाता है। वह सभी प्रकार के रत्नों से समृद्ध था।

गृहगाढामविच्छिद्रां समभूमौ निवेशिताम्।
शालितण्डुलसम्पूर्णामिक्षुकाण्डरसोदकाम् ।1.5.17।।

इसके आवासों का निर्माण समतल भूमि पर किया गया था और कोई भी स्थान अप्रयुक्त नहीं छोड़ा गया था। इसमें प्रचुर मात्रा में बारीक चावल और पानी भरा हुआ था जिसका स्वाद गन्ने के रस जैसा मीठा था।

दुन्दुभीभिर्मृदङ्गैश्च वीणाभिः पणवैस्तथा।
नादितां भृशमत्यर्थं पृथिव्यां तामनुत्तमाम्।।1.5.18।।
विमानमिव सिद्धानां तपसाधिगतं दिवि।
सुनिवेशितवेश्मान्तां नरोत्तमसमावृताम् ।।1.5.19।।
नगर तुरही, मृदंग, शुक्र और पांडवों की ध्वनि से गूंज उठा।
ये च बाणैर्न विध्यन्ति विविक्तमपरापरम्।
शब्दवेध्यं च विततं लघुहस्ता विशारदाः ।।1.5.20।।
सिंहव्याघ्रवराहाणां मत्तानां नर्दतां वने।
हन्तारो निशितैश्शस्त्रैर्बलाद्बाहुबलैरपि ।।1.5.21।।

इस शहर में हजारों योद्धा रहते थे जिन्हें महारथ कहा जाता था। वे कुशल धनुर्धर और तेज हाथ वाले थे। वे अकेले व्यक्तियों, रक्षाहीन व्यक्तियों, भागते हुए शत्रुओं को, जिन्हें ध्वनि से संकेत के माध्यम से पता लगाया जा सकता था, तीरों से नहीं छेदेंगे।

यह महान एवं पवित्र नगरी अयोध्या आज भी सीना ताने खड़ी है।

मध्यप्रदेश में श्रीराम के जहां-जहां चरण पड़े हैं वहां विकसित होगा पर्यटन स्थल

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भगवान श्रीराम की अयोध्या में गर्भ गृह में प्राण-प्रतिष्ठा का आयोजन ऐतिहासिक घटना है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सुशासन की स्थापना की गई है। वास्तव में रामराज्य की स्थापना हुई है। पूरी दुनिया इस बात को अलग दृष्टि से देख रही है। 142 करोड़ जनता ने सरकार के साथ खड़े होकर साम्प्रदायिक सौहार्द्र की मिसाल पेश की है। आज अपना लोकतंत्र वास्तव में गौरवान्वित हुआ है। बढ़ते हुए भारत के कदम सांस्कृतिक अनुष्ठान की दिशा में परस्पर साम्प्रदायिक सौहार्द्र के रूप में बड़ा उदाहरण प्रस्तुत हुआ है। इसके लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रधानमंत्री श्री मोदी और देश के सभी नागरिकों को बधाई दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में भी भगवान राम के जहां-जहां चरण पड़े हैं, लीलाएं हुई हैं उन धार्मिक स्थलों को पर्यटन के रूप में विकसित करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर मुख्यमंत्री निवास में आयोजित दीप प्रज्ज्वलन कार्यक्रम के बाद मीडिया को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अयोध्या में भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर श्यामला हिल्स स्थित मुख्यमंत्री निवास में दीपोत्सव पर्व मनाया। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने भगवान राम की पूजा- अर्चना के साथ प्रतीक स्वरूप दीप जलाए। मुख्यमंत्री निवास पर कुल 11 हजार 101 दीप जलाने का कार्यक्रम आयोजित किया गया। पूरे मुख्यमंत्री निवास दीपों की रोशनी से जगमगा उठा। जगह-जगह रंगोली और आकर्षक साज -सज्जा की गई थी। पूरा वातावरण राममय हो गया। लोगों में अपार उत्साह था। राम भजनो की धुन मन मोहने वाली थी। लोग भजनों को गुनगुना रहे थे और भजनों की धुन पर भाव विभोर हो गए थे। उत्साह मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने फुलझड़ी जलाई और जय श्री राम के नारे भी लगाए। इस अवसर पर सांसद साध्वी प्रज्ञा ठाकुर, श्री हितानंद शर्मा, विधायक श्री रामेश्वर शर्मा, विधायक श्री भगवान दास सबनानी, महापौर श्रीमती मालती राय, नगर निगम अध्यक्ष श्री किशन सूर्यवंशी, पूर्व विधायक ध्रुव नारायण सिंह , श्री आशीष अग्रवाल, पूर्व महापौर श्री आलोक शर्मा, श्री सुमित पचौरी सहित जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

स्वामी रामभद्राचार्य की गवाही से चकित रह गए थे सुप्रीम कोर्ट के जज

अयोध्या में राम मंदिर बनकर तैयार है। 22 जनवरी यानी कल भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा और मंदिर का उद्घाटन किया जाएगा। इस

बात से सभी वाकिफ हैं कि अयोध्या के राम मंदिर के पीछे एक विशाल जन आंदोलन भी था।

इस आंदोलन से कई बड़े नाम जुड़े, जिन्होंने मंदिर आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाया। इनमें स्वामी रामभद्राचार्य भी शामिल हैं जिन्होंने दिव्यांग होकर भी लोगों के मन में राम भक्ति की ज्योति को जलाए रखा।

राम जन्मभूमि मामले में स्वामी रामभद्राचार्य की गवाही भी काफी चर्चित है। उनकी इस गवाही की वजह से फैसला करने वाले जज भी चकित रह गए थे।

जैमिनीय संहिता का उदाहरण दे बताया सटीक स्थान

सुप्रीम कोर्ट में राम जन्मभूमि बाबरी मस्जिद मामले के दौरान स्वामी रामभद्राचार्य ने गवाही दी थी, जो सुर्खियों का हिस्सा बन गई। उन्होंने वेद-पुराण के आधार पर जो गवाही दी उससे कोर्ट के जज भी चकित रह गए। श्रीराम जन्मभूमि के पक्ष में रामभद्राचार्य वादी के तौर पर उपस्थित हुए थे। उन्होंने सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद की जैमिनीय संहिता से उदाहरण दिया था। रामभद्राचार्य ने जैमिनीय संहिता के तहत सरयू नदी के स्थान से विशेष दिशा की ओर बिल्कुल सटीक जन्मस्थान का ब्योरा दिया था।

चकित रह गए थे सुप्रीम कोर्ट के जज भी

रामभद्राचार्य की गवाही के बाद जब जज ने जैमिनीय संहिता मंगाई। जिन उदाहरणों का रामभद्राचार्य ने जिक्र किया था उसे जज ने खोलकर देखा। जज ने पाया कि सभी विवरण सही थे।

जज ने पाया कि जिस स्थान पर श्रीराम जन्मभूमि संहिता में बताई गई थी, विवादित ढांचा भी ठीक उसी स्थान पर था। स्वामी रामभद्राचार्य की गवाही ने फैसले का रुख मोड़ दिया। सुनवाई करने वाले जज ने चकित होकर रामभद्राचार्य की गवाही को भारतीय प्रज्ञा का चमत्कार माना। उन्होंने, एक व्यक्ति जो देख नहीं सकते, कैसे वेदों और शास्त्रों के विशाल संसार से उदाहरण दे सकते हैं, इसे ईश्वरीय शक्ति ही मानी जाती है।

राम मंदिर के लिए व्याकुल हैं रामभद्राचार्य

राम जन्मभूमि के लिए संघर्ष करने और लाठी तक खाने वाले पद्म विभूषण से सम्मानित तुलसी पीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य रामलला के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा की बात करते भावुक हो जाते हैं। उन्होंने राम मंदिर के लिए अपने संघर्ष के दिनों को याद किया।

राम मंदिर के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि वह इस शुभ घड़ी की प्रतीक्षा में थे। उन्होंने कहा, मेरी यह व्याकुलता वैसी ही है जैसी किसी पिता की अपने वर्षों से बिछड़े हुए पुत्र से मिलने की होती है।

रामलला प्राण प्रतिष्ठा में उमा भारती और साध्वी ऋतंभरा, खूब रोईं

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा करोड़ों भक्तों के लिए उनका सदियों पुराना सपना साकार होने जैसा है। जिसने राममंदिर के लिए अपना खून और पसीना बहाया है, उसके लिए इस पल का कोई मूल्य नहीं है।

प्राण प्रतिष्ठा के दौरान राम मंदिर आंदोलन की दो नायिकाएं जब मिलीं तो उनके आंसुओं ने संघर्ष की यह पूरी कहानी बयां कर दी। भाजपा नेता उमा भारती और साध्वी ऋतंभरा राम मंदिर के सामने एक दूसरे से मिलीं तो लिपटकर खूब रोईं।

उनकी तस्वीर लोगों को भाव विह्वल कर रही हैं। कहा जाता है कि एक तस्वीर हजार शब्दों के बराबर होती है। लेकिन यह एक तस्वीर राम मंदिर आंदोलन, भक्तों की कुर्बानी, आंक्रांताओं का अत्याचार और अपने राम को घर दिलाने के लिए तपस्या करने वाले साधु-संतों की पूरी कहानी कहने लगी।

राम मंदिर आंदोलन को दी थी दिशा

90 के दशक के राम मंदिर आंदोलन की होती है तो प्रवीण तोगड़िया, अशोक सिंघल, लालकृष्ण आडवाणी, विनय कटियार के साथ अगर दो महिला योद्धाओं का नाम आता है तो वह साध्वी ऋतंभरा और उमा भारती ही हैं। राम मंदिर के संदेश को घर-घर तक जन-जन तक पहुंचाने में उमा भारती और स साध्वी ऋतंभर के तेजस्वी भाषणों का बड़ा योगदान था। कारसेवक जब उग्र हो गए तो मंच पर साध्वी ऋतंभरा और उमा भारती ने उन्हें नियंत्रित किया। आचार्य धर्मेंद्र रामकथा कुंज के मंच से कारसेवकों से प्रसाद लेने को कह रहे थे। उनका संकेत था बाबरी की ईंटों से। उमा भारती ने कहा कि जब तक काम पूरा ना हो तब तक इलाका ना छोड़ें। इसे समतल करना है। उमा भारती ने नारा दिया था, राम नाम सत्य है, बाबरी मस्जिद ध्वस्त है। उस वक्त दोनों के भाषणों के ऑडियो कैसेट सुने जाते थे।

मार्च से अप्रैल माह में आयोजित होगा व्यापार मेला

भोपाल। प्रदेश में मार्च से अप्रैल माह 2024 में आयोजित होने वाले उज्जैन व्यापार मेले की तैयारियां तेज हो गई हैं। मुख्य सचिव वीरा राणा की अध्यक्षता में विगत दिन मंत्रालय में समीक्षा बैठक में उज्जैन व्यापार मेले से संबंधित विभिन्न विभागों की गतिविधियों की रूपरेखा तय की गई। यह जानकारी रविवार को जनसम्पर्क अधिकारी केके जोशी ने दी। उन्होंने बताया कि उज्जैन व्यापार मेले का आयोजन सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग द्वारा किया जा रहा है। नगरपालिक निगम उज्जैन को उज्जैन व्यापार मेला आयोजन के लिये नोडल एजेंसी बनाया गया है। उन्होंने बताया कि बैठक में मुख्य सचिव वीरा राणा ने लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, उद्यानिकी एवं खाद्य प्र-संस्करण, वित्त विभाग, गृह, परिवहन, कुटीर एवं ग्रामोद्योग, वाणिज्यिक कर, ऊर्जा, किसान-कल्याण एवं कृषि विकास, लोक निर्माण, औद्योगिक नीति एवं निवेश, संस्कृति, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, पर्यटन, नगरीय विकास एवं आवास और पशुपालन एवं डेयरी विभाग के अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव, सचिव, संभागायुक्त उज्जैन और उज्जैन कलेक्टर को मेले की तैयारियों के संबंध में निर्देश जारी दिए हैं। उज्जैन व्यापार मेले की तैयारियों के लिये अलग-अलग विभागों को जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं।

इसमें नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा मेले में होने वाले संभावित व्यय का वहन, आवंटित की जाने वाली दुकानें, मनोरंजन एवं खानपान जोन के लिये स्थल किराया से उपलब्ध कराने जैसे कार्य, औद्योगिक नीति एवं निवेश प्रोत्साहन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग द्वारा मेले के दौरान आयोजित होने वाले इन्वेस्टर समिट एवं उस पर होने वाले व्यय की व्यवस्था औद्योगिक निवेश एवं प्रोत्साहन विभाग द्वारा की जायेगी। इन्वेस्टर समिट अंतर्गत होने वाले सत्रों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग एवं सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विभाग द्वारा सहयोग किया जायेगा।

कुछ लोग बोलते थे राम मंदिर बना तो आग लग जाएगी, मोदी का विपक्ष पर हमला

हमारे राम आ गए हैं, बोले पीएम मोदी

अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा और पूजा-अर्चना करने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिना नाम लिए विपक्ष पर भी निशाना साधा। पीएम मोदी ने कहा कि एक समय था, जब कुछ लोग कहते थे कि राम मंदिर बना तो आग लग जाएगी।

ऐसे लोग भारत के सामाजिक भाव की पवित्रता को नहीं जान पाए। रामलला के इस मंदिर का निर्माण भारतीय समाज की शांति, धैर्य और आपसी सद्भाव, समन्वय का प्रतीक है।

राम मंदिर से कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा, हम देख रहे हैं कि राम मंदिर का निर्माण किसी आग को नहीं, बल्कि ऊर्जा को जन्म दे रहा है। राम मंदिर समाज के हर वर्ग को उज्ज्वल भविष्य के पथ पर प्रेरणा लेकर आया है। मैं आज उन लोगों से आह्वान करूंगा कि आइए आप महसूस कीजिए और सोच पर पुनर्विचार कीजिए कि राम आग नहीं हैं, ऊर्जा हैं। राम विवाद नहीं, राम समाधान हैं। राम सिर्फ हमारे नहीं है, राम सबके हैं। राम वर्तमान ही नहीं, बल्कि राम अनंतकाल हैं। आज जिस तरह राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के आयोजन से पूरा विश्व जुड़ा है, उसमें राम की सर्व व्यापकता के दर्शन हो रहे हैं। जैसा उत्सव भारत में है, वैसा ही अनेक देशों में है। आज अयोध्या का यह उत्सव रामायण की वैश्विक

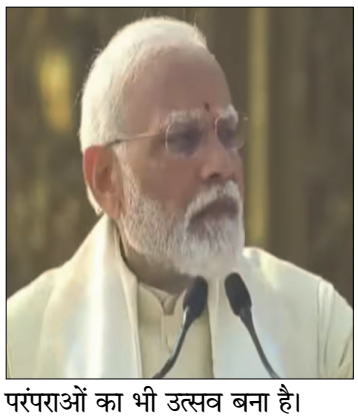

परंपराओं का भी उत्सव बना है।

हमारे राम आ गए हैं, बोले पीएम मोदी

पीएम मोदी ने अपने संबोधन की शुरुआत करते हुए कहा कि सदियों की प्रतीक्षा के बाद हमारे राम आ गए हैं। अब वे टेंट में नहीं रहेंगे, बल्कि भव्य मंदिर में रहेंगे। पीएम मोदी ने कहा कि 22 जनवरी 2024 का यह सूरज एक अद्भुत आभा लेकर आया है और यह एक नए कालचक्र का उद्गम है। प्रधानमंत्री ने कहा, हमारे रामलला अब टेंट में नहीं रहेंगे। हमारे रामलला अब इस दिव्य मंदिर में रहेंगे। आज हमारे राम आ गए हैं । मेरा पक्का विश्वास और अपार श्रद्धा है कि जो घटित हुआ है, इसकी अनुभूति देश के, विश्व के कोने-कोने में रामभक्तों को हो रही होगी।

ये क्षण आलौकिक है, ये पल पवित्रतम है

पीएम मोदी ने कहा, ये क्षण आलौकिक है, ये पल पवित्रतम है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, आज मैं प्रभु श्री राम से क्षमा याचना भी करता हूं, हमारे पुरुषार्थ में कुछ तो कमी रह गई होगी, हमारी तपस्या में कुछ कमी रही होगी कि हम इतने सदियों तक मंदिर निर्माण नहीं कर पाए... आज वह कमी पूरी हुई।

प्रधानमंत्री ने कहा कि राम मंदिर के भूमिपूजन के बाद से प्रतिदिन पूरे देश में उमंग और उत्साह बढ़ता ही जा रहा था और निर्माण कार्य देख देशवासियों में हर दिन एक नया विश्वास पैदा हो रहा था। उन्होंने कहा, आज हमें सदियों के उस धैर्य की धरोहर मिली है। आज हमें श्रीराम का मंदिर मिला है। पूरा देश आज दीवाली मना रहा है। आज शाम घर-घर रामज्योति प्रज्ज्वलित करने की तैयारी है।

रामलला के टेलिकास्ट रोकने पर तमिलनाडु सरकार को एससी की नसीहत

तमिलनाडु में मंदिरों और सार्वजनिक स्थानों पर रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लाइव टेलिकास्ट पर रोक लगाए जाने का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा है। सोमवार सुबह ही शीर्ष अदालत में इस पर सुनवाई हुई तो बेंच ने तमिलनाडु सरकार को नसीहत दी।

अदालत ने कहा कि लाइव स्ट्रीमिंग की मांगों को खारिज न किया जाए। यही नहीं कोर्ट ने कहा कि राज्य सरकार की यह दलील भी गलत है कि इलाके में दूसरे समुदाय के लोग भी रहते हैं, इसलिए परमिशन नहीं दी जा सकती और कानून व्यवस्था के बिगड़ने का खतरा है। इसके साथ ही शीर्ष अदालत ने स्टालिन सरकार से कहा कि वह मंजूरी की मांग वाले सभी आवेदनों पर विचार करे और उन पर जल्द फैसला ले।

वहीं अदालत में मामला पहुंचा तो तमिलनाडु सरकार ने कहा कि भजन, विशेष पूजा और स्क्रीनिंग पर कोई रोक नहीं लगाई गई है। बस यह ध्यान रखने को कहा गया है कि किसी भी तरह का व्यवधान अन्य लोगों को न हो। भाजपा के तमिलनाडु सचिव विनोज पी. सेल्वम ने यह अर्जी दाखिल की थी। उनका कहना था कि राज्य सरकार ने मंदिरों समेत कई सार्वजनिक स्थानों पर एलईडी लगाकर स्क्रीनिंग करने पर रोक लगा दी है।

यही नहीं निर्मला सीतारमण ने भी इस बारे में ट्वीट किया था। भाजपा का कहना है कि कांचीपुरम में जहां निर्मला सीतारमण का कार्यक्रम होना था, वहां से एलईडी की स्क्रीन्स को पुलिस ने हटवा दिया। उनका कहना था कि राज्य सरकार ने सार्वजनिक स्थानों पर पूजा, अर्चना और भंडारे एवं भजन आदि पर भी रोक लगा दी है। उनका कहना था कि यह फैसला गलत है और संविधान में दिए मूल अधिकारों का भी उल्लंघन करता है। केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि राज्य में 200 मंदिर भगवान राम के हैं। यहां कार्यक्रम होने थे, लेकिन पुलिस लोगों को यहां आने से रोक रही है।

गौरतलब है कि तमिलनाडु सरकार के खिलाफ भाजपा आक्रामक रही है और उस पर सनातन विरोधी होने के आरोप भी लगाती रही है।

गौरतलब है कि अयोध्या में चल रहे कार्यक्रम को लेकर समूचे देश और दुनिया में रह रहे भारतीय समुदाय के लोगों के बीच उत्साह है। इस कार्यक्रम का दुनिया भर में लोग लाइव टेलिकास्ट के जरिए भी आनंद ले रहे हैं। गली-गली और मोहल्लों में खूब सजावट की गई है और लोग इसे लेकर बेहद उत्साहित हैं।

मुख्यमंत्री राहगीरी कार्यक्रम में शामिल हुए

उज्जैन। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव अंकपात मार्ग पर आयोजित किए गए श्री राम राहगीरी कार्यक्रम में शामिल हुए। उल्लेखनीय है कि उक्त राहगीरी कार्यक्रम सोमवार 22 जनवरी को अयोध्या में आयोजित होने वाले श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को समर्पित रहा।

वैष्णव अखाड़ों के समीप अंकपात मार्ग पर भगवान श्री राम को समर्पित राहगीरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। प्रभु श्री राम हम सभी के आराध्य हैं। उन्होंने अपने जीवन में मर्यादा, धैर्य और लोकतंत्र का आदर्श प्रस्तुत किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम सभी उत्सव मनाए, अपने घरों पर दिए जलाएं, मिठाइयां बांटे और आनंद के साथ प्रभु श्री राम के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के साक्षी बने।

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने सर्वप्रथम अंकपात मार्ग स्थित अंकपात द्वार पर पहुंचकर भगवान श्री राम,लक्ष्मण, माता सीता तथा हनुमान जी का पात्र निभाने वाले कलाकारों की आरती की और उन्हें पुष्प माला पहनाई। इसके पश्चात भगवान श्री राम की रथ पर सवारी निकाली गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राहगीरी कार्यक्रम में काफी संख्या में मौजूद नागरिकों का अभिवादन स्वीकार किया। राहगीरी कार्यक्रम में विभिन्न स्थानों पर स्वागत मंच, स्वास्थ्य परीक्षण काउंटर, भजन मंडलियां, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शासकीय योजनाओं के बैनर, योग के काउंटर लगाए गए थे। इसके अलावा शासकीय धन्वंतरि आयुर्वेद चिकित्सा महाविद्यालय द्वारा मोटे अनाज को बढ़ावा देने के लिए मोटे अनाज से निर्मित विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का स्टॉल भी लगाया गया था।

मुख्यमंत्री का विभिन्न मंचों पर पुष्प वर्षा कर तथा साफा पहनाकर स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री ने राहगीरी कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने इस दौरान कुछ मंचों पर पहुंचकर भगवान श्री राम के भजन गाए। साथ ही उन्होंने शंख बजाया, ढोल बजाए और घोड़े की सवारी भी की। उसके पश्चात मुख्यमंत्री ने सांदीपनि आश्रम पहुंचकर वहां महर्षि सांदीपनि, भगवान श्री कृष्ण, सुदामा और बलराम के दर्शन और पूजन अर्चन किया तथा आरती भी की। इस दौरान सांसद श्री अनिल फिरोजिया, विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, श्री बहादुर सिंह बोरमुंडला, श्री संजय अग्रवाल, श्री श्याम बंसल, विधायक श्री चिंतामणि मालवीय, संभागायुक्त डॉ संजय गोयल, आईजी श्री संतोष कुमार सिंह, डीआईजी श्री अनिल सिंह कुशवाहा, कलेक्टर श्री नीरज कुमार सिंह, पुलिस अधीक्षक श्री सचिन शर्मा एवं अन्य गणमान्य नागरिक और अधिकारी उपस्थित थे।

नीलगंगा सरोवर पर मां गंगा की गोद में श्री रामलला को विराजमान कर भक्तों ने महाआरती उतारी

उज्जैन। अयोध्या में श्री रामलला कि प्राण प्रतिष्ठा उपलक्ष्य में प्राचीन नीलगंगा सरोवर पर मां गंगा की गोद में श्री रामलला को विराजमान कर भक्तों ने महाआरती उतारी।

ढोल नगाड़ों के साथ दीपोत्सव मनाया गया एवं भव्य आकाशीय आतिशबाजी की गई।

नीलगंगा सरोवर जूना अखाड़ा घाट पर अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद एवं श्री पंच दशनाम जूना अखाड़ा के संयोजन में आकर्षक विद्युत साज सज्जा, दीपों की सजावट एवं श्री राम सीता की मनमोहक रंगोली बनाई गई। अखाड़े के सचिव महंत देवगिरी महाराज के सानिध्य में श्री राम लाल की महाआरती की गई एवं इसके उपरांत 101 किलो हलवे का प्रसाद वितरण किया गया।

इस मौके पर एमआईसी मेंबर दुर्गा शक्ति सिंह चौधरी, डॉ. राहुल कटारिया, आशुतोष सैनी, शुभम जैन, तुषार खींची, श्याम सिंह, राजेश कटारिया, मिनेश जैन, विनय मौर्य सहित बड़ी संख्या में भक्तगण मौजूद रहे।

ऐसा होता हैं, क्या होना चाहिए?

1. कुटुम्ब कम हुआ 2. सम्बंध कम हुए 3. नींद कम हुई 4. बाल कम हुए 5. प्रेम कम हुआ 6. कपड़े कम हुए 7. शर्म कम हुई 8. लाज-लज्जा कम हुई 09. मर्यादा कम हुई 10 बच्चे कम हुए 11 घर में खाना कम हुआ 12 पुस्तक वाचन कम हुआ 13 भाई-भाई प्रेम कम हुआ 15 चलना कम हुआ 16 खुराक कम हुआ 17 घी-मक्खन कम हुआ18 तांबे-पीतल के बर्तन कम हुए 19 सुख-चैन कम हुआ 20 मेहमान कम हुए 21 सत्य कम हुआ 22 सभ्यता कम हुई 23 मन-मिलाप कम हुआ 24 समर्पण कम हुआ? संतान को दोष न दें।

बालक या बालिका को इंग्लिश मीडियम में पढ़ाया।

अंग्रेजी बोलना सिखाया।

बर्थ डे और मैरिज एनिवर्सरी।

जैसे जीवन के शुभ प्रसंगों को अंग्रेजी कल्चर के अनुसार जीने को ही श्रेष्ठ मानकर।

माता-पिता को मम्मा और डैड कहना सिखाया

जब अंग्रेजी कल्चर से परिपूर्ण बालक या बालिका बड़ा होकर, आपको समय नहीं देता, आपकी भावनाओं को नहीं समझता, आप को तुच्छ मानकर जुबान लड़ाता है और आप को बच्चों में कोई संस्कार नजर नहीं आता है, तब घर के वातावरण को गमगीन किए बिना यासंतान को दोष दिए बिनाकहीं एकान्त में जाकर रो लेंक्योंकिपुत्र या पुत्री की पहली वर्षगांठ से ही, भारतीय संस्कारों के बजाय केक कैसे काटा जाता है? सिखाने वाले आप ही हैंहवन कुण्ड में आहुति कैसे डाली जाए।

मंदिर, मंत्र, पूजा-पाठ, आदर-सत्कार के संस्कार देने के बदले

केवल फर्राटेदार अंग्रेजी बोलने को ही, अपनी शान समझने वाले आप बच्चा जब पहली बार घर से बाहर निकला तो उसे प्रणाम-आशीर्वाद के बदले बाय-बाय कहना सिखाने वाले आप परीक्षा देने जाते समय ईष्ट देव/बड़ों के पैर छूने के बदले Best of Luck कह कर परीक्षा भवन तक छोड़ने वाले आप बालक या बालिका के सफल होने पर, घर में परिवार के साथ बैठ कर खुशियाँ मनाने के बदले होटल में पार्टी मनाने की प्रथा को बढ़ावा देने वाले आप बालक या बालिका के विवाह के पश्चात कुल देवता/देव दर्शन को भेजने से पहले हनीमून के लिए फॉरेन/टूरिस्ट स्पॉट भेजने की तैयारी करने वाले आप ऐसी ही ढेर सारी अंग्रेजी कल्चर्स को हमने जाने-अनजाने स्वीकार कर लिया है।

अब तो बड़े-बुजुर्गों और श्रेष्ठों के पैर छूने में भी शर्म आती है गलती किसकी? मात्र आपकी (माँ-बाप की) अंग्रेजी International भाषा है इसे सीखना है इसकी संस्कृति को, जीवन में उतारना नहीं है मानो तो ठीक नहीं तो भगवान ने जिंदगी दी है चल रही है, चलती रहेगी आने वाली जनरेशन बहुत ही घातक सिद्ध होने वाली है, हमारी संस्कृति और सभ्यता विलुप्त होती जा रही है, बच्चे संस्कारहीन होते जा रहे हैं और इसमें मैं भी हूं,अंग्रेजी सभ्यता को अपना रहे सोच कर, विचार कर अपने और अपने बच्चे, परिवार, समाज, संस्कृति और देश को बचाने का प्रयास करें? राम मंदिर के उद्घाटन पर एक संकल्प ले।

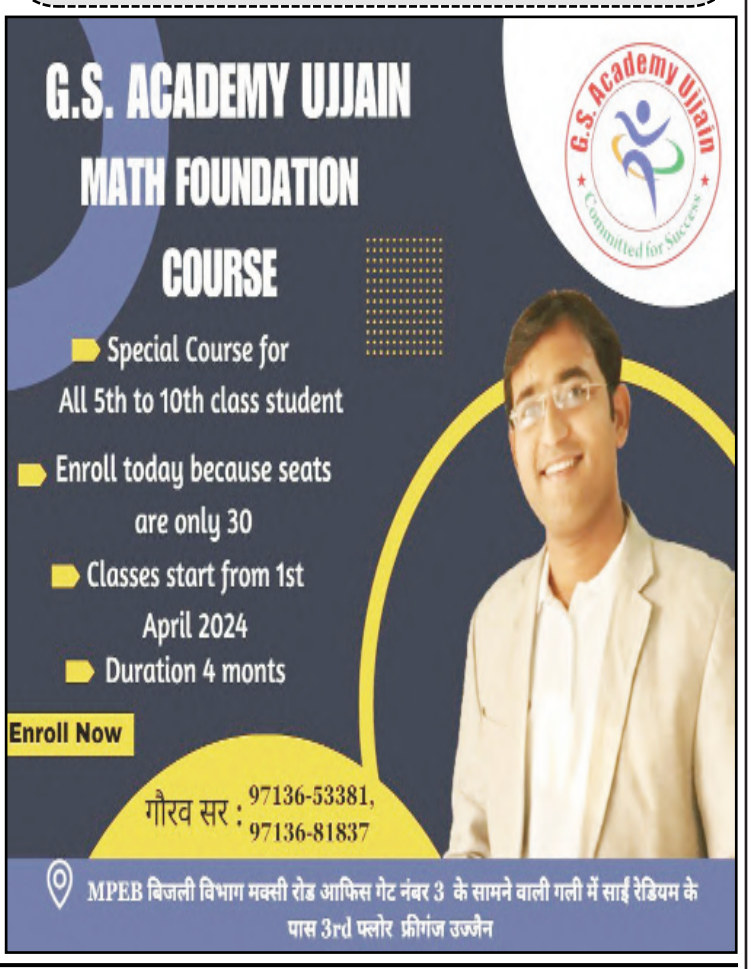

स्वताधिकारी/प्रकाशक मनमोहन शर्मा के लिये साप्ताहिक उज्जैन टाइम्स 110, तिरुपति एवेन्यू, होटल नत्रक्ष के पीछे, पंचक्रोशी मार्ग, उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित एवं ज्योति ट्रेडर्स एवं प्रिन्टर्स न्यू रोड़, उज्जैन से मुद्रित।

● प्रधान सम्पादक : मनमोहन शर्मा मोबा. 9827233734 manmohan680@gmail.com (सभी वाद-विवादों का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा)। (म.प्र. शासन से 01-04-1997 से समाचार पत्र विज्ञापनों हेतु अनुमोदित)